International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 431-432

आदिवासी साहित्य में स्त्री चिंतन के स्वर

साक्षी सिंह
पीएच.डी., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

''आदिवासी साहित्य मूलतः सृजनात्मकता का साहित्य है. यह इंसान के उस दर्शन को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है जो मानता है कि प्रकृति और सृष्टि में जो कुछ भी हैं, जड़-चेतना, सभी कुछ सुन्दर है ..... वह दुनिया को बचाने के लिए सृजन कर रहा है। उसकी चिंताओं में पूरी सृष्टि, समष्टि और प्रकृति है.''[1] प्रसिद्ध महिला आदिवासी लेखिका वन्दना टेटे जी का यह कथन स्पष्ट करता है कि आदिवासी साहित्य, आदिवासी जीवन दृष्टि और विचारधारा का पोषक साहित्य है. वह सिर्फ अपनी अस्मिता को बचानें के लिए लड़ने वाला साहित्य नहीं है बल्कि ये साहित्य अपनें समेकित दृष्टिकोण लिए सारी दुनिया को सम्भाल कर बचा कर रखनें का समर्थन करता है, वो सुन्दरता के लिए किसी कृत्रिम आम्ल्ब पर आश्रित नहीं है बल्कि हर जीव-जन्तु, वस्तु आदि अर्थात हर जड़ व चेतन को उसकी प्राकृतिक अवस्था में सुन्दर मानता है. और प्रकृति के इस जीवनदायिनी सुन्दर स्वरुप को नष्ट करनें का प्रयत्न करनें वाले हर आडम्बर का खंडन करता है चाहे वह आडम्बर विकास के नाम पर हो, सभ्यता के नाम पर हो या कि सौन्दर्य के नाम पर. अतः आदिवासी साहित्य का उद्देश्य ही सृजनात्मकता के माध्यम से सृजन का समर्थक होना और विनाशकारी प्रवित्तियों की मुखालफत करना है.

आदिवासी साहित्य की अवधारणा का मूल उद्देश्य रहा है प्रकृति को और प्रकृति के करीब रह रहे लोगों को सुरक्षित एवं संरक्षित करना. विभिन्न आदिवासी साहित्यकारों नें यह बात कही भी है कि आदिवासी अवधारणा के माध्यम से दुनिया को बचाया जा सकता है. इस पर्चे का विषय है 'आदिवासी साहित्य में स्त्री चिंतन के स्वर'.....अर्थात आलोच्य विषय मुख्यतः आदिवासी-महिला लेखिकाओं पर केन्द्रित है. आदिवासी महिला लेखिकाओं नें टेक्स्ट एवं आलोचना दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किये किये हैं. आदिवासी साहित्य में महिला आलोचकों को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला है जो कि अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि मुख्यधारा साहित्य में महिला लेखिकाओं को तो स्थान अब मिलनें लगा है कितुं सिद्धान्तकारों के रूप में अभी भी मुख्यधारा साहित्य उन्हें विशेष तवज्जो नहीं देता.

महिला आदिवासी साहित्यकारों के विषय में बात करनें से पहले आदिवासी साहित्य का संक्षिप्त परिचय रख देना उचित है-"आदिवासी साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें आदिवासियों का जीवन और समाज उनके दर्शन के अनुरूप अभिव्यक्त हुआ है. आदिवासी साहित्य को विभिन्न नामों से पूरी दुनिया में जाना जाता है. यूरोप और अमेरिका में इसे नेटिव अमेरिकन लिटरेचर, कलर्ड लिटरेचर, स्लेव लिटरेचर और अफ्रीकन-अमेरिकन लिटरेचर, अफ्रीकन देशों में ब्लैक लिटरेचर और ऑस्ट्रेलिया में एबोरिजिनल लिटरेचर, तो अंग्रेजी में इंडीजिनस लिटरेचर, फर्स्टपीपुल लिटरेचर और ट्राइबल लिटरेचर कहते हैं। भारत में इसे हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में सामान्यतः 'आदिवासी साहित्य' ही कहा जाता है".[2]

बीसवीं सदी में भारतीय समाज में कई नए सामाजिक आंदोलन सामनें आए. सामन्तवादी मूल्यों की जकड़न ढीली होनें एवं शिक्षा के प्रचार पसार से दलितों, स्त्रियों, आदिवासियों व जनजातीय समुदायों ने नई चेतना का संचार हुआ और उन्होंने एकजुट हो कर अपने प्रति हो रहे हर तरह के शोषण का विरोध किया और संपूर्ण समुदाय को गरिमापूर्ण जीवन एवं सम्मानजनक सामाजिक स्थिति दिलाने के लिए सामूहिक मुक्ति अभियान चलाया. इस अभियान के लिए सामाज, राजनीति और साहित्य तीनों ही क्षेत्रों में सक्रीय आंदोलन चला. आजादी के पश्चात् प्रकाश में आए अस्मितावादी विमर्शों में दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श के बाद सबसे नया विमर्श आदिवासी विमर्श है जो कि आदिवासी चेतना से युक्त है. आदिवासी साहित्य हिंदी साहित्य पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। आज आदिवासी साहित्य हिंदी के अलावा लगभग 100 आदिवासी भाषाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है. आदिवासी साहित्यकारों की अवधारणा है कि- ''सृष्टि सर्वोच्च नियामक सत्ता है. संपूर्ण सजीव और निर्जीव जगत तथा प्रकृति सबका अस्तित्व एक समान है. मनुष्य का धरती, प्रकृति और सृष्टि के साथ सहजीवी संबंध है.''[3]

विभिन्न आदिवासी महिलाएं अपने सक्रीय लेखन द्वारा आदिवासी साहित्य को समृद्ध कर रही हैं. जहाँ इक्कीसवीं सदी के कुछ विमर्श राजनीति से पैदा हुए तो कुछ अस्मिता व अस्तित्व को लेकर वाद-विवाद को लेकर अस्तित्व में आए, वहीं आदिवासी विमर्श में राजनीति और अस्मिता दोनों का समावेश है. ठीक उसी प्रकार आदिवासी महिला लेखिकाएं भी एक साथ दो-दो मोर्चों पर लड़ती हैं क्योंकि उनके शोषण का स्तर भी दोहर है. आदिवास साहित्य कई प्रकार से अन्य अस्मितावादी साहित्यों से अलग है, आदिवासी साहित्य किसी समुदाय विशेष को बचाने का साहित्य या शोषणकारी सत्ता से लड़ने के लिए एक नई सत्ता खड़ी करनें का साहित्य नहीं है बल्कि वो सृजनात्मक शक्ति के माध्यम से हर तरह के शोषण को ख़त्म करनें में प्रयासरत साहित्य है.

आदिवासी महिला साहित्यकारों की प्रमुख विशेषता ये रही है कि उनके जो चिंताएं और प्रश्न हैं वो सिर्फ महिलाओं या आदिवासी समाज की अभिव्यक्तियों और चिंताओं मात्र तक सीमित नहीं हैं बल्कि उनकी दृष्टि जल,जंगल, जमीन को बचानें से लेकर जंगल के हर जीव-जंतु और मनुष्यों की पीड़ाओं तक जाती है और ये समेकित दृष्टि हम आदिवासी साहित्य की विभिन्न महिला राचानाकारों जैसे- एलिस एक्का, रोज केरकेट्टा, निर्मला पुतुल, सरोज केरकेट्टा, वन्दना टेटे, दमयंती सिंकू, सावित्री बड़ाईक, रेशमा हंसदा आदि के लेखन में देख सकते हैं.

आदिवासी साहित्य की श्रेणी में किस प्रकार के साहित्य को रखा जाए और किसे नहीं इस सन्दर्भ में वरिष्ठ आदिवासी चिंतक रोज केरकेट्टा, आदिवासी एवं गैर-आदिवासी लेखकों के साहित्य में अंतर स्पष्ट करती हुई कहती हैं- ''गैर-आदिवासी द्वारा रचित आदिवासी विषयक साहित्य में शिल्प है परन्तु आदिवासी आत्मा नहीं है। उसमें सर्जक अपनी दृष्टि से अच्छाई-बुराई का कलात्मक विवरण रखता है, लेकिन आदिवासियों का सच उससे अलग है.''[4]

आदिवासी साहित्यकारों का मत है कि आदिवासी साहित्य में, कहन परम्परा में कहे गए और उन्नीसवीं सदी के बाद से आदिवासी साहित्यकारों द्वारा लिखे गए किस्से

और कहानियां, दोनों को ही आदिवासी साहित्य माना जाना चाहिए. इसीलिए वे अपने साहित्य को ओरेचार (ओरल+लिटरेचर) कहते हैं. साठ के दशक की कहानीकार 'एलिस एक्का', जिन्हें हिंदी की प्रथम दलित व आदिवासी कथाकार होनें का श्री दिया जाता है, उनकी प्रमुख कहानियों का सम्पादन चर्चित आदिवासी लेखिका वंदना टेटे जी नें किया जो कि 2015 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई, इस पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर एकत्रित आदिवासी साहित्यकारों नें कहा कि- "आदिवासी समाज का जीवन और अनुभव जब कहन बन कर आता है तो हम एक नये दर्शन से परिचित होते हैं. यह दर्शन सहअस्तित्व और सहजीविता का है जो एलिस की कहानियों में है और जिसकी बुनावट बहुत बारीक है. एलिस अपनी कहानियों में साठ के दशक के आदिवासी उम्मीदों को सामने रखती हैं. लेकिन बाद में वे उस छल को भी अभिव्यक्त करती हैं जिसका शिकार आदिवासी समाज बनता है."[5]

यहाँ हम देख सकते हैं कि आदिवासी महिला लेखन को आरम्भिक दौर से ही सैद्धांतिक महत्त्व व स्थान प्रदान किया जाने लगा था. इनकी कहानियों के लिए आलोचक सावित्री बड़ाईक लिखती हैं कि- "किसी भी क्षेत्र के समुदाय की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से होती है. एलिस की कहानियों की भाषा आदिवासी हिन्दी है. वे नागपुरी, मगही, खोरठा, भाषाओं का भी प्रयोग संवादों में करती है. पर संवादों में सरलता है. साधारण लोग सरल भाषा का ही प्रयोग करते हैं... एलिस एक्का अपनी कहानियों में आदिवासी समाज की मूल प्रवृतियों और जीवन-मूल्यों का ध्यान रखती हैं. उनकी कथा नायिकाएँ अपने आत्मनिर्णय के अधिकार और पहचान (अस्मिता) के लिए निरन्तर संघर्ष करती हैं. समानता, सहअस्तित्व, सहभागिता, सामूहिकता, श्रम के प्रति निष्ठा, स्त्री-पुरुष के बीच बराबरी आदि जीवनमूल्य का वर्णन एलिस एक्का की कहानियों की विशेषता है".[6]

डॉ. रोज केरकेट्टा का ने भी अपनी रचनाओं के द्वारा आदिवासी समाज के लोगों के जीवन मूल्यों को सामनें रखा है और उसके माध्यम से समतामूलक समाज की परिकल्पना की है. यहाँ उदाहरण के रूप में उनकी कहानी 'रमोणी' को देख सकते हैं जिसमें उन्होंने बताया है कि किस तरह सरकारें सीधे-सादे आदिवासियों को फ़ौज में भर्ती का लाच देकर उनके शर्म का शोषण करती हैं. दूर दराज के आदिवासी इलाक़ों की उपजों का किस तरह उन्हें कम मूल्य देती हैं और फिर राजधानी ले जाकर उसी उपज से बड़ा मुनाफ़ा कमाती हैं. एक तरफ जहाँ डूगरू कूलू और बन्ने जैसे चरित्र हैं जो कि सरकारी नौकर हैं, सरकार की सारी कारस्तानियों को जानते हुए भी चुप चाप अपनी रोटी कमानें में यकीन करते हैं वहीँ दूसरी तरफ़ सोलो दीदी और रमोणी जैसे महिला पात्र हैं जो कि नक्सलबाड़ी आन्दोलन से प्रभावित हैं और अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं. आदिवासी समाज के मूल्यों को डॉ. केरकेट्टा नें रमोणी के माध्यम से व्याख्यायित करवाते हुए लिखा है कि- "किसी के पेट में दो कौर अन्न पहुंचाना और सूखे कंठ को तर करना ही हमारा धर्म है"[7]

आदिवासी साहित्य में स्त्री रचनाकारों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है. उन्होंने सैधांतिक विमर्श, कविता, कहानियों आदि के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाई है. आदिवासी लेखिकाओं का चिंतन इतना समृद्ध होनें की एक एक बड़ी वजह यह रही है कि ज्यादातर लेखिकाएं आंदोलनों से जुडी हुई हैं जिनसे समाज, राजनीती और आर्थिक परिदृश्य पर उनकी समझ और अनुभवों में काफ़ी गहराई आई है.

सन्दर्भ सूची

1. वंदना टेटे, आदिवासी साहित्य: परम्परा और प्रयोजन, प्रथम संस्करण 2013, पृ.सं. 87
2. विकिपीडिया के 'आदिवासी साहित्य' पेज से
3. सं. वंदना टेटे, आदिवासी दर्शन और साहित्य, संस्करण 2016, पृ.सं.34
4. सं. वंदना टेटे, एलिस एक्का की कहानियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्र.सं. 2015, पृ.सं. 22
5. http://www.lenseye.co/एलिस-एक्का-की-कहानियाँ
6. डा. सावित्री बड़ाईक, हिंदी की आदिवासी कथा लेखिकाएं, आदिवासी साहित्य (त्रैमासिक), अंकः 4-5, अक्टूबर 2015-मार्च 2016, नई दिल्ली, पृष्ठ 41
7. रमोणी, कहानी, रोज केरकेट्टा